parmeshwarkaniyam.org

परिशिष्ट 8c: बाइबिल के पर्व — आज इनमें से कोई भी क्यों नहीं रखा जा सकता

यह पृष्ठ उस श्रृंखला का हिस्सा है जो परमेश्वर की उन व्यवस्थाओं की पड़ताल करती है जिन्हें केवल तभी माना जा सकता था जब यरूशलेम में मंदिर खड़ा था।

- परिशिष्ट 8a: वे परमेश्वर की व्यवस्थाएँ जिन्हें मंदिर की आवश्यकता थी
- परिशिष्ट 8b: बलिदान — आज इन्हें मानना क्यों असम्भव है
- परिशिष्ट 8c: बाइबिल के पर्व — आज इनमें से कोई भी क्यों नहीं रखा जा सकता (यह पृष्ठ)।
- परिशिष्ट 8d: शुद्धिकरण की व्यवस्थाएँ — मंदिर के बिना इन्हें मानना क्यों असम्भव है
- परिशिष्ट 8e: दशमांश और पहिलौठे फल — आज इन्हें मानना क्यों असम्भव है
- परिशिष्ट 8f: परमप्रसाद सेवा — यीशु का अंतिम भोजन पास्का था
- परिशिष्ट 8g: नज़ीर और मन्नत की व्यवस्थाएँ — आज इन्हें मानना क्यों असम्भव है
- परिशिष्ट 8h: मंदिर से संबंधित आंशिक और प्रतीकात्मक आज्ञाकारिता
- परिशिष्ट 8i: क्रूस और मंदिर

पवित्र पर्व — व्यवस्था ने वास्तव में क्या आज्ञा दी थी

वार्षिक पर्व केवल उत्सव या सांस्कृतिक जुटान नहीं थे। वे पवित्र सभाएँ थीं जो भेंटों, बलिदानों, पहिलौठे फलों, दशमांश और शुद्धिकरण की माँगों पर आधारित थीं, जिन्हें परमेश्वर ने सीधे उस मंदिर से बाँध दिया जिसे उसने चुना था (व्यवस्थाविवरण 12:5-6; 12:11; 16:2; 16:5-6)। हर बड़ा पर्व — फसह, अखमीरी रोटी का पर्व, हफ्तों का पर्व, तुरहियों का दिन, प्रायश्चित्त का दिन और झोंपड़ियों का पर्व — उपासक से यह माँग करता था कि वह यहोवा के सामने उसी स्थान पर उपस्थित हो जिसे उसने चुना, न कि किसी भी स्थान पर जो लोगों को सुविधाजनक लगे (व्यवस्थाविवरण 16:16-17)।

- फसह के लिए यह आवश्यक था कि मेम्ना पवित्रस्थान में चढ़ाया जाए (व्यवस्थाविवरण 16:5-6)।
- अखमीरी रोटी के पर्व के लिए प्रतिदिन आग द्वारा चढ़ाई जाने वाली भेंटें आवश्यक थीं (गिनती 28:17-19)।
- हफ्तों के पर्व के लिए पहिलौठे फलों की भेंटें आवश्यक थीं (व्यवस्थाविवरण 26:1-2; 26:9-10)।
- तुरहियों के पर्व के लिए “आग द्वारा चढ़ाए जाने वाले” बलिदान आवश्यक थे (गिनती 29:1-6)।

- प्रायश्चित्त के दिन के लिए अतिपवित्र स्थान में याजकाई विधियाँ आवश्यक थीं (लैव्यव्यवस्था 16:2-34)।
- झोंपड़ियों के पर्व के लिए प्रतिदिन बलिदान चढ़ाना आवश्यक था (गिनती 29:12-38)।
- आठवें दिन की सभा उसी पर्व-चक्र का भाग थी और उसमें अतिरिक्त भेंटों की आज्ञा थी (गिनती 29:35-38)।

परमेश्वर ने इन पर्वों का वर्णन बड़ी सटीकता से किया और बार-बार यह ज़ोर दिया कि ये उसके नियत समय हैं, जिन्हें ठीक उसी प्रकार मनाया जाना है जैसा उसने आज्ञा दी (लैव्यव्यवस्था 23:1-2; 23:37-38)। इन पालनियों का कोई भाग व्यक्तिगत व्याख्या, स्थानीय परम्परा या प्रतीकात्मक अनुकूलन के लिए नहीं छोड़ा गया था। स्थान, बलिदान, याजक और भेंट — सब आज्ञा का ही हिस्सा थे।

अतीत में इस्राएल ने इन आज्ञाओं का पालन कैसे किया

जब मंदिर खड़ा था, तब इस्राएल ने पर्वों को ठीक वैसा ही माना जैसा परमेश्वर ने निर्देश दिया था। लोग नियत समयों पर यरूशलेम की यात्रा करते थे (व्यवस्थाविवरण 16:16-17; लूका 2:41-42)। वे अपनी भेंटें याजकों के पास लाते थे, जो उन्हें वेदी पर चढ़ाते थे। वे उस स्थान में यहोवा के सामने आनन्द मनाते थे जिसे उसने पवित्र ठहराया था (व्यवस्थाविवरण 16:11; नहेमायाह 8:14-18)। यहाँ तक कि स्वयं फसह — जो सब राष्ट्रीय पर्वों में सबसे प्राचीन है — को भी केंद्रीय पवित्रस्थान की व्यवस्था हो जाने के बाद घरों में नहीं मनाया जा सकता था। उसे केवल उसी स्थान पर मनाया जा सकता था जहाँ यहोवा ने अपना नाम रखा (व्यवस्थाविवरण 16:5-6)।

पवित्रशास्त्र यह भी दिखाता है कि जब इस्राएल ने पर्वों को गलत तरीके से मनाने की कोशिश की तो क्या हुआ। जब यारोबाम ने अन्य स्थानों और अन्य तिथियों पर पर्व रच लिए, तो परमेश्वर ने उसकी पूरी व्यवस्था को पाप ठहराया (1 राजाओं 12:31-33)। जब लोगों ने मंदिर की उपेक्षा की या अशुद्धता को अनुमति दी, तब स्वयं पर्व अस्वीकार्य हो गए (2 इतिहास 30:18-20; यशायाह 1:11-15)। यह ढाँचा हर बार एक-सा मिलता है: आज्ञाकारिता के लिए मंदिर आवश्यक था, और मंदिर के बिना आज्ञाकारिता ही नहीं रहती थी।

ये पर्व-सम्बन्धी आज्ञाएँ आज क्यों पूरी नहीं की जा सकतीं

मंदिर के नष्ट हो जाने के बाद पर्वों के लिए आज्ञा दिया हुआ ढाँचा अस्तित्व में ही नहीं रहा। स्वयं पर्व नहीं मिटे — व्यवस्था नहीं बदलती — पर आवश्यक तत्व समाप्त हो गए:

- कोई मंदिर नहीं
- कोई वेदी नहीं
- कोई लेवीय याजक-वर्ग नहीं
- कोई बलिदानी व्यवस्था नहीं
- पहिलौठे फल चढ़ाने के लिए कोई निर्धारित स्थान नहीं
- फसह के मेम्ने को प्रस्तुत करने की कोई सम्भावना नहीं
- प्रायश्चित्त के दिन के लिए कोई अतिपवित्र स्थान नहीं
- झोंपड़ियों के पर्व के दौरान प्रतिदिन के बलिदान नहीं

क्योंकि परमेश्वर ने पर्वों की आज्ञाकारिता के लिए इन्हीं बातों को आवश्यक ठहराया था, और क्योंकि इन्हें बदला नहीं जा सकता, न अनुकूलित किया जा सकता, न प्रतीक में बदलकर पूरा किया जा सकता, इसलिए सच्ची आज्ञाकारिता अब असम्भव है। मूसा ने आगाह किया था कि इस्राएल किसी भी नगर में फसह नहीं चढ़ा सकता “जो तुम्हें तुम्हारा परमेश्वर

यहोवा दे", बल्कि केवल "उस स्थान पर जहाँ वह अपने नाम के निवास के लिए चुनेगा" (व्यवस्थाविवरण 16:5-6)। वह स्थान अब अस्तित्व में नहीं है।

व्यवस्था अब भी विद्यमान है। पर्व अब भी विद्यमान हैं। पर आज्ञाकारिता के साधन समाप्त हो गए हैं — उन्हें स्वयं परमेश्वर ने हटा दिया है (विलापगीत 2:6-7)।

प्रतीकात्मक या गढ़े हुए पर्व-पालन की भूल

आज कई लोग प्रतीकात्मक नाट्यरूपान्तरण, मण्डली-आधारित जुटानों या बाइबिल की आज्ञाओं के सरल रूप बनाकर "पर्वों का आदर करने" की कोशिश करते हैं:

- बिना मेम्ने के फसह (पासओवर) सेडर करना
- "झोंपड़ियों का पर्व" मनाना पर बिना किसी बलिदान के
- "शावूओत" मनाना पर बिना इस बात के कि पहिलौठे फल किसी याजक के पास ले जाए जाएँ
- ऐसी "नए चन्द्रमा की सभाएँ" गढ़ना जिनकी तोराह में कभी आज्ञा नहीं दी गई
- "अभ्यास-पर्व" या "भविष्यवाणी-पर्व" जैसी बातों को विकल्प के रूप में रचना

इनमें से कोई भी रीति पवित्रशास्त्र में कहीं नहीं मिलती।
इनमें से कोई भी मूसा, दाऊद, नहेमायाह, यीशु या प्रेरितों द्वारा नहीं अपनाई गई।
इनमें से कोई भी उस आज्ञा के समान नहीं है जो परमेश्वर ने दी।

परमेश्वर प्रतीकात्मक भेंटें स्वीकार नहीं करता (लैव्यव्यवस्था 10:1-3)।
परमेश्वर "कहीं भी" की गई उपासना स्वीकार नहीं करता (व्यवस्थाविवरण 12:13-14)।
परमेश्वर मानवीय कल्पना से बनाई गई विधियों को स्वीकार नहीं करता (व्यवस्थाविवरण 4:2)।

बलिदानों के बिना कोई पर्व, बाइबिल का पर्व नहीं है।
मंदिर में चढ़ाए गए मेम्ने के बिना कोई फसह, फसह नहीं है।
याजकाई सेवा के बिना कोई "प्रायश्चित्त का दिन" आज्ञाकारिता नहीं है।

इन व्यवस्थाओं की मंदिर के बिना नकल करना विश्वासयोग्यता नहीं है — यह घमण्ड है।

पर्व उसी मंदिर की प्रतीक्षा कर रहे हैं जिसे केवल परमेश्वर ही पुनर्स्थापित कर सकता है

तोरा इन पर्वों को "पीढ़ी-दर-पीढ़ी सदा की विधि" कहती है (लैव्यव्यवस्था 23:14; 23:21; 23:31; 23:41)। पवित्रशास्त्र — व्यवस्था, भविष्यद्वक्ता या सुसमाचार — में कहीं भी इस वर्णन को रद्द नहीं किया गया। स्वयं यीशु ने पुष्टि की कि जब तक आकाश और पृथ्वी टल न जाएँ, व्यवस्था का एक छोटा से छोटा अक्षर भी न गिरेगा (मत्ती 5:17-18)। आकाश और पृथ्वी अब भी बने हुए हैं; इसलिए पर्व भी बने हुए हैं।

परन्तु उन्हें आज इसलिए नहीं माना जा सकता क्योंकि परमेश्वर ने हटा दिया है:

- स्थान को
- वेदी को
- याजक-वर्ग को
- उस बलिदानी प्रबन्ध को जो पर्वों को परिभाषित करता था

इसलिए, जब तक परमेश्वर वही पुनर्स्थापित न करे जिसे उसने हटाया है, हम इन आज्ञाओं का सम्मान इस प्रकार करते हैं कि उनकी परिपूर्णता को स्वीकार करते हैं — न कि प्रतीकात्मक विकल्प गढ़कर। विश्वासयोग्यता का अर्थ है परमेश्वर की योजना का सम्मान करना, न कि उसे बदल देना।